शिक्षा के एक संत–रघुवीर चतुर्वेदी

यह खबर हमें किसी अखबार से पता नहीं चली । अलवर से सुरेश पंडित का पत्र (4 मई, 99) आया, उन्होंने यह शोक-समाचार दिया । लिखा : ''नई-शिक्षा'' के संपादक रघुवीर चतुर्वेदी का 26 अप्रैल को निधन हो गया। 'नई-शिक्षा' का यह 49 वां वर्ष चल रहा था । उनकी इच्छा थी, दिसम्बर में यह वर्ष पूरा कर इसे बंद कर दिया जाये । पर यह इच्छा अधूरी ही रह गयी ।'' पंडित जी ने इस पत्र में हमसे शिकायत भी की, ''आपसे 'नई-शिक्षा' की समीक्षा देने को कहा था पर आपने ध्यान ही नहीं दिया । अब वे नहीं हैं जिन्हें वह समीक्षा देखकर खुशी मिलती ।''

'शिक्षा-विमर्श' में 'नई-शिक्षा' की समीक्षा देकर हम रघुवीर चतुर्वेदी को खुशी नहीं दे सके, इसके लिए हमें खेद है। असल में 'विमर्श' में हम पिछले काफी समय से शैक्षिक पत्रिकाओं की समीक्षा का सिलसिला शुरु करना चाहते रहे हैं लेकिन अभी तक यह संभव नहीं हो सका । इस शृंखला की शुरुआत हमने 'नई-शिक्षा' से ही करना चाहा। लेकिन नई-शिक्षा पर शुरु में जो समीक्षा आयी, हमें लगा कि यह सम्यक नहीं है । 'नई शिक्षा' पर एक समग्र समीक्षा के लिए हम प्रयासरत थे , इससे रघुवीर जी वाकिफ थे और पंडित जी को भी यह मालूम है।

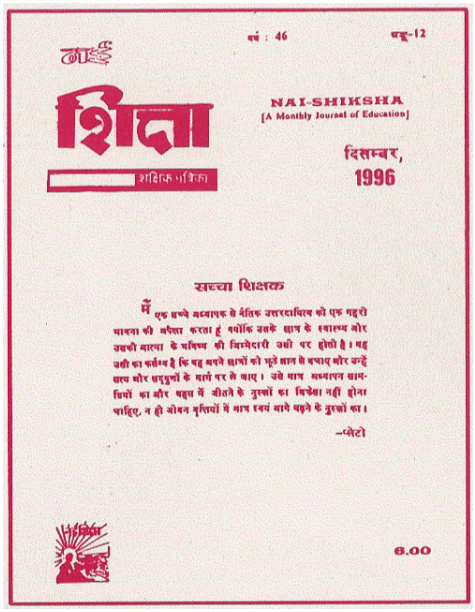

'नई शिक्षा' का पहला अंक अगस्त 1951 में निकला । प्रवेशांक में रघुवीर चतुर्वेदी ने लिखा था, ''हमारा क्षेत्र है शिक्षा, शिक्षक और छात्र तथा अंत तक हम इनके लिए अपनी लड़ाई जारी रखेंगे।'' उस समय वे युवा थे और शिक्षा विभाग में कार्यरत थे । लोगों को उनमें युवा आक्रोश ज्यादा और स्थायित्व की संभावना कम नजर आयी होगी। लेकिन जीवन पर्यन्त उन्होंने अपने इस लगभग वैयक्तिक और स्वतंत्र प्रकाशन को जारी रखा । बिना किसी बाहरी सहायता के वे 'न दैन्यं न पलायनम' के संकल्प पर डटे रहे।

'नई शिक्षा' का उद्देश्य हर अंक में छपता रहा : 'नई शिक्षा' शिक्षा की स्वतंत्र मासिक पत्रिका है। पत्रिका का उद्देश्य पाठकों, शिक्षा क्षेत्र में जुटे शिक्षकों, शिक्षा शास्त्रियों, प्रशासकों तथा शिक्षा क्षेत्र में रुचि रखने वाले सभी नवोदित लेखकों को शिक्षा से संबंधित विचारों/समस्याओं पर खुलकर अपने विचार व्यक्त करने तथा अनुभवों के आदान-प्रदान के लिए एक स्वतंत्र मंच प्रदान करना है।' पत्रिका का संपादन अवैतनिक था । पत्रिका लेखकों को भी कोई पारिश्रमिक नहीं दे पाती थी । तथापि लघु कलेवर की इस पत्रिका ने न केवल अपनी नियमितता बरकरार रखी बल्कि बुनियादी शिक्षा, संस्कृत शिक्षा, साक्षरता, प्राथमिक शिक्षा, माध्यमिक शिक्षा, उच्च शिक्षा, महिला शिक्षा और शिक्षक प्रशिक्षण पर केन्द्रित अंकों और विशेषांकों को भी प्रस्तुत किया।

यह कैसी दुखद विडम्बना है कि शिक्षा के इस संत के असामयिक निधन की सूचना को पत्र-पत्रिकाओं ने उपेक्षित किया। शिक्षा के प्रति रोज संकल्प व्यक्त करने वाली प्रदेश सरकार की ओर से भी कोई शोकाभिव्यक्ति प्रकाश में नहीं आयी । शिक्षा जगत के प्रबुद्धों ने कोई शोक श्रद्धांजलि उन्हें अर्पित की हो, ऐसी भी कोई खबर नहीं है । जब शिक्षा के इस संत का गुजर जाना हमें व्यथित नहीं कर रहा तो फिर 'नई शिक्षा' के भविष्य पर बात करने का मतलब ही क्या रह जाता है ! सं. ◆